वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 34	Year 3	Volume 10	July 2015 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 4

विचार

ईश्वर को कौन नहीं जान सकता

आहिंसा, सत्य, चोरी न करना, ब्रहमचर्य के नियमों का पालन, अपिरग्रह तथा शौच संतोष आदि नियमों के पालन से ही आत्मा पवित्र होती है और शुभ कर्म में रत पवित्र आत्मा में ही प्रभु के दर्शन होते है।

उपनिषद में एक मन्त्र आता है जिसका भावार्थ है——जिसका मन बुरे विचारों से भरा हुआ है और अच्छे विचारों के लिये मन में कोई स्थान नहीं व अच्छे विचारों के प्रति विरोद्ध व अवेहलना है, जिसका मन हर समय बुरे कृत्यों में लिप्त रहने के कारण अशान्त है और चिन्तित और व्याकुल रहता है, जो हर बात को हर चीज को सन्देह से देखता हो, जिसका मन चंचल है और कभी स्थिर

नहीं रहता हो, ऐसा मनुष्य कभी भी ईश्वर को नहीं जान सकता।

जिसकी वृतियां सांसारिक विष्यों में लिप्त हैं,ऐसा मनुष्य भगवान को तो क्या अपने आप को भी नहीं देख पाता। ऐसा इस लिये है, क्योकि चित की वृतियां उसे भटकाती फिरती हैं, कभी एक वस्तु में तो कभी दूसरी वस्तु में ले जाती हैं। मन की तेज रफतार, आत्मा को परमात्मा से नहीं मिलने देती। जब आत्मा, परमात्मा से दूर है ऐसे में भगवान के दर्शन नहीं हो सकते।

आगे कठोपनिषद में कहा है———जो ज्ञानवान नहीं है, जिसका मन व इन्द्रियां जिसके

Contact:
Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

वश में नहीं हैं वह भगवान के दर्शन नहीं कर सकता अपितु जन्म मरण के चक्र में ही रहेगा। जिसका व्यवहार दूसरों के प्रति क्रूरता, दम्भ और छल कपट का है, जिनकी वाणी वश में नहीं है, जो ईष्या द्वेष की आग में जल रहें हैं, ऐसे लोग भी भगवान को नहीं पा सकते।

संसार में अधिक संख्या उन लोगों की है जो आत्म बल से वंचित है व प्रमाद और आलस्य में फसें हुये हैं वे इस शरीर को ही सब कुछ समझते हैं और इस की पूजा में लगे रहते हैं, जिन्होने यह निश्चय कर रखा है जैसे भी हो धन कमाओ और खाते कमाते ही मर जाओ, जिनको इतना भी ज्ञान नहीं है कि जो चीज़ बनी है वह समाप्त भी होगी, ऐसे लोग न तो आत्म दर्शन कर सकते है और न ही भगवान के दर्शन।

अतः ईश्वर के दर्शन वही कर सकता है जिस ने चित की वृतियों को और मन को अभ्यास व वैराग्य द्वारा वश में किया हुआ है। जो आत्मबल बढ़ाने के लिये ब्रहमचार्य का पालन करते हैं। जो अहिंसा व सत्य के मार्ग पर चलते हैं। जो संसार के पदार्थो को अपने जीवन की यात्रा का एक साधन मानते हैं। वासना की आग को वैराग्य की राख से दबा कर रखते हैं। जिनका मन शान्त है व अंहकार जिन से कोसों दूर है। जो शरीर से स्वस्थ है।

महोपनिषद में लिखा है–––यह संसार वासनारूपी जल से भरा हुआ है परन्तु हे मनुष्य तू ज्ञानरूपी नौका में सवार होकर पार जा सकता हैं ऐसा ज्ञान जो तुझे चित की वृतियां और प्रमाद व आलस्य से बचाय रखे। किसी भी पदार्थ के प्रतिबिम्ब को देखने के लिये जिन बातों की आवश्यकता है वे हैं–– दर्पण या स्थिर साफ पानी, प्रकाश और पदार्थ और दर्पण के बीच किसी भी प्रकार के आवरण का न होना। इसी प्रकार ईश्वर के दर्शन के लिये आवश्यक है मन हमारा साफ हो, ज्ञान का प्रकाश हो और संदेह और अविद्या रूपी आवरण न हो।

यह भी सत्य है न तो कोई दुनिया को छोड़ सकता है न दुनिया किसी को छाड़ती है। प्रयत्न यह होना चाहिये कि दुनिया के सारे वयवहार करते हुये अपनी वृति को इसके जाल में फंसने न दिया जाये।

तुलसी ने इस बात को बहुत सुन्दर कहा है,

तुलसी जग में यों रहो,

त्यों रसना मुख माहि।

खाती है घी तेल नित,

फिर भी चिकनी नाहीं

इस विषयों से भरे संसार में वैसे ही रहें जैसे मुंह के अन्दर जिब्हा है। वह तेल घी सब खाती है, फिर भी उस पर चिकनाहट नहीं आती।

भगवान कृष्ण अर्जुन से कहतें हैं जो चित योगाभ्यास से युक्त है वह वृतियां और प्रमाद व आलस्य पर विजय पाता हुआ परम दिव्य को प्राप्त होता हैं।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

अपने तरीकों पर ध्यान दें
(Mind your manners)

वेदांत कहता है शतहस्त समाहर–– हे मानव तूं सैंकड़ो हाथों से कमा। अर्थात खूब धन कमा। आगे कहा है, वयं स्याम पतयो रयीणाम– हम सब प्रकार के ऐश्वर्यो के अधिपति बने।

परन्तु इस के साथ यह भी कहा है, तू ऐश्वर्यशाली तो बन, लेकिन अपने आप को एक मानव के रूप में भी विकसित कर। जिसका सीधा अर्थ है–––खुद को दूसरों में देख। दूसरों से वही व्यवहार कर जो तू दूसरों से अपेक्षा करता है। यह और भी आवश्यक हो जाता है जब कि आज हम अपने लिये अधिक से अधिक सुख आराम चाहते है।

अपने लिये सुख चाहते हुये, कम से कम हम इतना तो कर सकते हैं कि हमारे व्यवहार से किसी को दुख या तकलीफ न पहुंचे। जैसे कि हम अच्छी से अच्छी कार, मोवाईल फोन रख कर अपनी चमक को बढ़ाना चाहते हैं उसी तरह आवश्यक है कि एक बेहतर जिम्मेवार व्यक्ति बनने के लिये ईमानदारी, सत्यता, धैर्य, अपने साथियों के लिये प्यार व संवेदना और जो आप जैसे भाग्यशाली नहीं है उनके प्रति अपने व्यवहार द्वारा करूणा जैसे मूल्यों को भी अपने में सजोऐं और अपने व्यवहार में उनका परिचय दें। जब हम सुख देने वाली वस्तुऐं , जैसे कार या काफी सारे फीचरज वाला मोवाईल है, के बारे में ज्ञान शीघ्र से शीघ्र प्राप्त करना चाहते है और कई वार दूसरे से भी सीखते हैं, उसी तरह नैतिक ज्ञान प्राप्त करने की भी हमारी जिज्ञासा होनी चाहिये और उसको जीवन में लाने के लिये प्रयत्न होना चाहिये। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि भौतिक उन्नति, नैतिक और अध्यात्मिक ज्ञान के बिना कुछ लोगों के चरित्र और आचरण को नष्ट कर देती है। इसी लिये वेद के निम्न मन्त्र में, जिसे हम प्रार्थना स्तुती मन्त्र में बोलते हैं, प्रभु से यह प्राथना की गई है

ओइम अग्ने नये सुपथा राये अस्मान, विश्वानी देव वयुनानी विद्वान,

युयोध्यस्मज्जुहुराणमनो, भूयिष्ठांते नमः उक्तिं विधेम।।

हे प्रकाशस्वरूप प्रभु, सही ज्ञान और सही पथ प्रर्दशन के लिये हम आपकी शरण में आए हैं। आप सभी ज्ञानो से परिपूर्ण हैं। हम ऐश्वर्य व वैभव के लिये आपसे प्रार्थना कर रहें हैं। हमें ऐश्वर्य व वैभव मिले पर साथ ही कुटिलतापूर्ण कर्मो से भी दूर रहें क्योकिं ऐश्वर्य व वैभव के साथ कुटिलतापूर्ण कर्म विनाश की ओर ले जाते हैं। हमारी बार – बार यही प्रार्थना है कि हमे श्रेश्ठ मार्ग पर ही चलाना।

उदाहरण के लिये हम में से कई ऐसे हैं जो इस बात से बहुत खुश होतें हैं अगर उनका बच्चा बिना लाईसैंस के गाड़ी चलाये। न केवल खुश होते हैं बल्कि यह बात दूसरों को भी गर्व से बताते है। वह इस बात को तनिक भी नहीं सोचते कि उनके बच्चे का यह कदम किसी अन्जान की जान भी ले सकता है। हम अपने स्वार्थों के लिये, जिन से शायद कछ पैसे का फायदा हो जाये, हम झूठ बोलने से बिल्कुल नहीं हिचकचाते । अक्सर देखा गया है जैसे ही हमारे पास संपन्नता और समृद्धि आती है हम में अंहकार और लोभ भी आ जाता है। जो व्यक्ति अपने आप को इन से दूर रखता है उसे हम हारा हुआ या कमजोर कह देते हैं उदाहरण के लिये महत्वपूर्णपद पर पहुंचकर भी कोई व्यक्ति अगर कायदे कानून का पालन करता है हम उसे उस व्यक्ति की तुलना में कमजोर समझते हैं जो कि अपनी पहुंच या दादागिरी से काम करवाता है।

हमारी समृद्धि की एक और खास बात यह है कि जैसे ही हम पहले से बड़ी श्रेणी में पहुंच जाते हैं हम अपने से नीचे के व्यक्ति को घृणा की दृश्टि से देखना श्शरू कर देते हैं। अक्सर हम सोचने लगते हैं कि हम अलग दुनिया के हैं, उसका और हमारा क्या मेल। यह भूल जाते हैं कि कल तक हम भी उसी में से एक थे। हमारा आचरण और वर्ताव भौतिक तौर पर अपने से उपर वालों के लिये एक होता है और जिनको हम अपने से छोटा मानकर चलते हैं उनके लिये दूसरा। जब कि सच्चाई यह है कि व्यक्ति के व्यवहार का पता इस बात से लगता है कि वह अपने से कम ओहदे या हैसियत वालों से कैसे पेश आता है।

समाज में हमारे चरित्र का पता इस बात से भी लगता है कि हम र्सावजनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं का प्रयोग कैसे करते है। सरकार तो शौचालय बनवा सकती है पर उनको साफ रखना तो हमारे उपर है। एक सभ्य व्यक्ति सार्ववजनिक स्थानों व सब के प्रयोग में आने वाली सहुलतों का प्रयोग वैसे ही करता है जैसे कि अपनी चीजों का। अगर हम सभ्य नहीं होंगे तो अच्छी से अच्छी सुविधा का प्रयोग करते हुये भी मन में डर या हिचकिचाहट होगी। दिल्ली की मैटरो टरेन ; डमजतव ज्तंपदद्धइस का उदाहरण है। यह विश्व स्तर की है पर आज नई दिल्ली स्टेशन पर इस में चढ़ने में डर लगता है। कारण हम में बहुतों को धक्का मार कर चढ़ने और उतरने की आदत बन गई है। यही लोग पक्तिं में रहें तो चाहे लड़की है या वृद्ध किसी को भय नहीं होगा। यदि टरेन के चलने के लिये, डिब्बे के दरवाजे बन्द होना अनिवार्य न हो तो लोग इस में भी वैसे ही लटक कर जायें जैसे दूसरी जन–साधारण गााडियों में जाते है। आपको किसी दूसरे देश में युवतियों के लिये टरेन में अलग डिब्बा नहीं दिखेगा पर हमारे यहां आवश्यक बन गया। जो कि हमारे व्यवहार, सभ्यता और चरित्र को बताता हैं।

सभ्यता और अच्छा आचरण कुछ गिने चुने लोगों या स्थानों के लिये नहीं होता पर सभ्य व्यक्ति वह है जो इन बातों का ध्यान हर जगह और सब के साथ रखता है ।भौतिक उन्नती तभी सुखकारी लगती है अगर हम अपने आचरण और व्यवहार को भी चमका कर रखे ।बातें बहुत छोटी होती है, पर उनका प्रभाव, खास कर दूसरे और बाहर वाले व्यक्तियों पर बहुत अधिक होता हे।

मैं सड़क पार करने का एक उदाहरण दे रहा हूं। हिन्दुस्तान में अधिकतर कार और स्कूटर सवार की कोशिश होगी कि मैं जो सड़क पार कर रहा है उस से पहले निकल जांउ। जब कि विकसित देशों में अपने वाहन को आहिस्ता कर वे सड़क पार करने वाले को जाने देंगे।

वैदिक संस्कृति और सभ्यता में मानव उसी को कहा गया है जो कि दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति भी संवेदनशील है। हम देखेंगे वैदिक प्रार्थनाओं में सिर्फ अपनी ही नहीं बल्कि सभी के सुख की प्रार्थना की जाती है। सवे। भवन्तु सुखिन———हे प्रभु सब जगह सुख शान्ति हो सब का भला हो । वासुधेव कटुम्बकम———सारा विश्व एक परिवार है। ऐसे संस्कृति के लोग अगर स्वार्थी और सवेदना विहीन हैं तो उस के लिये जिम्मेवार है हमारे धर्म के ठेकेदार, जो कि मन्दिरों, समाजों पर कब्जा कर बैठ जाते हैं। वे धर्म का पाठ नहीं देते पर कर्मकाण्ड और सार्म्पदाय से जुड़े चिन्हों का पाठ देतें है।

इस का एक ही हल है। अपने को सब से अच्छा न मानकर जहां भी अच्छी बातें नजर आती हैं उन को ग्रहण करें। चाहे इसलाम ही क्यों न हो या पाश्चात्य स्भयता से मतलव रखती हो। कर्मकाण्ड और भाशा से निकलकर भावना पर ध्यान दें। बात मन्त्र का उचारण ठीक करने की नहीं, बात है मन्त्र में कही बात को जीवन में धारण करने की। ईनाम उस बच्चे को दें जिसका आचरण अच्छा हो न कि उसको जो कि उस का उचारण ठीक करता है। जब आप ऐसा करते हैं तो आपका उदेश्य धर्मप्रचार न होकर भाशा प्रचार होता है ओर तभी वेद का ज्ञान पुस्तकों तक ही रह जाता है।

किसी ने बहुत ठीक कहा है
आदमी आदमी जो बन जाये,
दुख सारे जहां के मिट जायें
फरिश्ते से बेहतर है इसां होना।
पर इसमें पड़ती है मेहनत ज्यादा ।।

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

How parenting plays an important role in character building

Subroto Bagchi CEO MindTree

I was the last child of a small-time government servant, in a family of five brothers. My earliest memory of my father is as that of a District Employment Officer in Koraput, Orissa. It was, and remains as back of beyond as you can imagine. There was no electricity; no primary school nearby and water did not flow out of a tap. As a result, I did not go to school until the age of eight; I was home-schooled. My father used to get transferred every year. The family belongings fit into the back of a jeep – so the family moved from place to place and without any trouble, my Mother would set up an establishment and get us going. Raised by a widow who had come as a refugee from the then East Bengal, she was a matriculate when she married my Father.

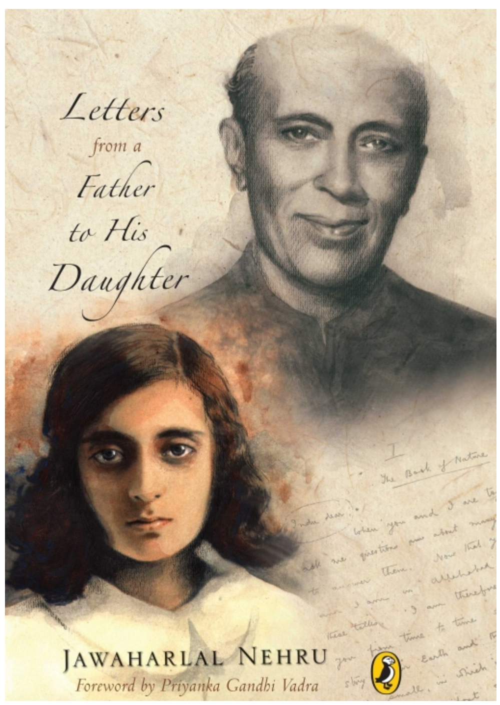

My parents set the foundation of my life and the value system, which makes me what I am today and largely, defines what success means to me today.

As District Employment Officer, my father was given a jeep by the government. There was no garage in the Office, so the jeep was parked in our house. My father refused to use it to commute to the office. He told us that the jeep is an expensive resource given by the government- he reiterated to us that it was not ”his jeep” but the government's jeep. Insisting that he would use it only to tour the interiors, he would walk to his office on normal days.. He also made sure that we never sat in the government jeep – we could sit in it only when it was stationary.

That was our early childhood lesson in governance – a lesson that corporate managers learn the hard way, some never do.

The driver of the jeep was treated with respect due to any other member of my Father's office. As small children, we were taught not to call him by his name. We had to use the suffix 'dada' whenever we were to refer to him in public or private. When I grew up to own a car and a driver by the name of Raju was appointed – I repeated the lesson to my two small daughters. They have, as a result, grown up to call Raju, 'Raju Uncle' – very different from many of their friends who refer to their family driver, as 'my driver'. When I hear that term from a school- or college-going person, I cringe.

To me, the lesson was significant – you treat small people with more respect than how you treat big people. It is more important to respect your subordinates than your superiors.

Our day used to start with the family huddling around my Mother's chulha – an earthen fire place she would build at each place of posting where she would cook for the family. There was neither gas, nor electrical stoves.The morning routine started with tea. As the brew was served, Father would ask us to read aloud the editorial page of The Statesman's 'muffosil' edition – delivered one day late. We did not understand much of what we were reading. But the ritual was meant for us to know that the world was larger than Koraput district and the English I speak today, despite having studied in an Oriya medium school, has to do with that routine. After reading the newspaper aloud, we were told to fold it neatly. Father taught us a simple lesson.

He used to say, "You should leave your newspaper and your toilet, the way you expect to find it". That lesson was about showing consideration to others. Business begins and ends with that simple precept.

Being small children, we were always enamoured with advertisements in the newspaper for transistor radios – we did not have one. We saw other people having radios in their homes and each time there was an advertisement of Philips, Murphy or Bush radios, we would ask Father when we could get one. Each time, my Father would reply that we did not need one because he already had five radios – alluding to his five sons.

We also did not have a house of our own and would occasionally ask Father as to when, like others, we would live in our own house. He would give a similar reply," We do not need a house of our own. I already own five houses". His replies did not gladden our hearts in that instant.

Nonetheless, we learnt that it is important not to measure personal success and sense of well being through material possessions

वैदिक प्रार्थना

उदबुध्यसवागने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सॅसृजेथामयं च।
अस्मिनत्सधस्थे अध्युतसस्मिन विश्वे देवा यजमानश्च सीदत

हे अग्नि, (यहां ईश्वर को अग्नि कह कर सम्भोदित किया गया है) मेरे अन्दर ऐसी ज्वाला प्रज्वलित करें जो कि मेरी सारी बुराईयों को भस्म कर दे और मुझे जो कमजोर हैं, अभाग्य हैं, उन्हें बल प्रदान करने के लिये, उनके लिये त्याग करने की, दूसरों के शोशण से बचाने की शक्ति दें।

O lusturous God kindle the fire with in us that may burn my evils and give me the strength to make sacrifice for the meek and the weak to save them from the oppressors.

सम्पादकिय

इसे आसन दिवस' कहें, न कि योग दिवस'

केवल कुछ आसन करने से व्यक्ति योगी नहीं बन जाता

अभी सरकार की पहल के परिणाम स्वरूप देश भर में योग दिवस मनाया गया। एक अच्छा प्रयास है। कम से कम कुछ लोगों का ध्यान इस और तो गया कि हम अपने शरीर को स्वस्थ कैसे रखें जो कि उतना ही आवश्यक है जितना कि भौतिक और अध्यातिमक तौर पर आगे बड़ना। सरकार ने इस दिवस को सफल मनाने के लिये बहुत पैसा भी खर्चा कारण प्रधानमन्त्री स्वयं योग के बहुत बड़े उपासक हैं। परन्तु मेरा मानना है कि देश के लोंगों को यह जानने का पूरा अधिकार है कि सरकार ने स्वयं को योग गुरू कहने वालों के कहने पर जो आम जनता कों परोसा, कया वह योगा ही था या योग के नाम पर कुछ और। आईये इस की एक समीक्षा करें। मैं यह नहीं कह रहा कि जो सरकार ने कदम उठाया वह आम जनता के लिये लाभप्रद नहीं, वहुत लाभप्रद है पर बादाम कह कर खुर्मानी की गुठलियों खिलाना गलत है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि यह 'आसन' जो कि हमारे शरीर को हृष्ट पुष्ट व सुन्दर बनाते हैं, ऋषि पातंजली द्वारा बताए अश्टांग योग की एक सीढी है पर जब तक व्यक्ति बाकी सात सीढीयों से उसी शृंख्ला में नहीं करता जैसे की ऋषि पातंजली ने बताया है इन आसनों को योग कहना गलत होगा व आम व्यक्ति को गुमराह करना है। ये आसन शरीर को सुन्दर, हृष्ट पुष्ट व सुन्दर तो बना सकते है परन्तु यह सोचना कि यह आपको बेहतर मनुष्य भी बना सकते हैं, शायद ठीक नहीं जब कि सच्चाई यह है कि अष्टांग योग करने से इन्सान, मनुष्य से उपर उठ कर देवता बन सकता हैं।

अच्छा होगा हम योग के ठीक रूप को समझें। योग नाम है उस क्रिया का जिससे हम अपने को परमात्मा से जोड़ते हैं। शरीर को प्रकृति से जोड़ने का नाम भोग व परमात्मा से जोड़ने का नाम योग हैं। यह चित को उसकी वृतियों से अलग करना है। जब आप अपने चित को मन की वृतियों से अलग कर लेगें तो अपने स्वरूप में स्थिर हो जायेगे यही योग है।

महर्षि पतंजली द्वारा बताए अष्टांग योग की आठ सीढ़ीयां हैं––यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधी। पांच यम हैं––सत्य, आहिंसा, अस्तेय, ब्रहमचर्य और अपरिग्रह। इसी तरह पांच नियम हैं––शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर समर्पण महर्षि पतंजली ने जब यह अष्टांग योग की आठ सीढ़ीयां का कम बनाया तो उन्होने यह उमीद की थी कि वयक्ति उसी कम में चलता हुआ समाधी तक पहुंचेगा यानी की यम और नियम के बाद ही आसन की क्रिया को शुरू करेगा। जिसका सीधा अर्थ यह है कि अगर आप यम और नियम को धारण किये बिना आसन की क्रिया को शुरू करते हैं तो आसन योग न होकर एक व्यायाम होगा। यह अष्टांग योग की आठ सीढ़ीयां न केवल शरीर को हृष्ट पुष्ट व सुन्दर बनाने के लिये हैं अपितु शरीरिक, अध्यात्मिक व मानसिक उत्थान द्वारा अपने को परमात्मा से जोड़ने की क्रिया है जिसे हम समाधी कहते हैं।

प्रणायाम सांस पर नियंत्रण की क्रिया है। प्राणायाम द्वारा चित, उसकी वृतियों से अलग होता जाता है। जब आप अपने चित को मन की वृतियों से अलग कर लेगें तो अपने स्वरूप में स्थिर हो जायेगे व ध्यान कर सकते हैं, यह प्रत्याहार द्वारा

प्राप्त किया जाता है। धारणा उस अवस्था को कहा है जब व्यक्ति एक ही बिन्दु पर काफी समय तक अपने मन को टिका सके, अर्थात मन में जो हर समय विचार आते रहते हैं उन से मन स्वतन्त्र हो जाए। यह बिन्दु है ईश्वर, उदाहरण के लिये हम ईश्वर के मुख्य नाम ओइम या ओंकार पर ध्यान केंद्रित करे।

ध्यान उस अवस्था का नाम है जब मन निर्विषय हो कर एक ही स्थान पर केन्दित हो जाये। पांच विषय जिनसे व्यक्ति को निर्विषय होना है, वे हैं ––– आंख से देखना, कान से सुनना, नाक से सूंघना, जिव्हा से चखना व त्वचा से छूना। सांख्यदर्शन का ऋषि कहता है, इन पांच अवस्थाओं से जब मन अलग होकर केवल सच्चिदानन्द, परिपूर्ण, घट–घटवासी, सर्वान्तरयामी परमात्मा के ध्यान में मग्न हो, उसी अवस्था का नाम ध्यान है। प्राणायाम, प्रत्याहार और ध्यान का उहेश्य मन को केन्दित करना है और जब व्यक्ति काफी समय तक इस ध्यान की स्थिती में रहे उसे समाधि का नाम दिया गया है। यह एक ऐसी स्थिती है जब योगी अपने आप को ईश्वर के साथ पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ महसूस करता है और अपने आप को ऐसे आनन्द में पाता है जिसका वर्णन करना आसान नहीं केवल सच्चा योगी ही उसके आरे में जानता है। इस तरह योग का उदेश्य समाधी तक पहुंचना है पर यह तभी सम्भव है जब व्यकित महर्षि पतंजली द्वारा बताए अश्टांग योग की आठ सीढ़ीयां ––यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रतिहार, धारना, ध्यान व समाधि का क्रम से पालन करे।

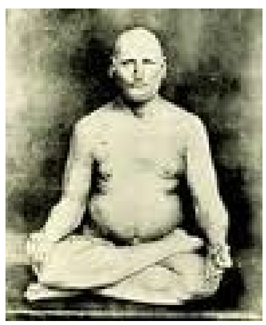
असली योगी

इनमें जो पहले पांच अंग–– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार हैं वह योगी के लिये बुनियाद का काम करतें हैं इनका सीधा सम्बन्ध शरीर व मस्तिक्ष से होता है। आखरी तीन स्थितीयां––धारना, ध्यान व समाधी तब तक सम्भव नहीं हैं जब तक कि पहली पांच द्वारा मन को स्थिर न कर लिया जाए। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि समाधी या अध्यात्मिक रूप से प्रकाशवान होने के लिये व्यक्ति को आठों सीढ़ीयों से गुजरना आवश्यक है जब कि शरीर को सुन्दर व हृष्ट पुष्ट बनाने के लिये आसन ही काफ़ी हैं परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने आप को अगर योगी कहे तो वह दूसरों को गुमराह करना है।

योगी अभ्यास से ही सुख और दुख को एक ही तरह महसूस करने के योग्य बनता है। न तो वह सफलता और सुख की घड़ियों में खुशी से पागल हो जाता है और न ही दुख व असफलता उसे तोड़ देती है। उसके मन में न तो किसी प्रकार का भय रहता है न ही उसमे मन में किसी के प्रति घृणा का भाव होता है। वह संसार को सहज स्वभाव से देखता है।

गीता में श्री कृश्ण ने योगी उसे कहा है जिस का मन हर स्थिती में स्थिर है। जो कि सुख और दुख को एक ही तरह महसूस करता है। न तो अपेक्षाए हैं, न इच्छांए और न ही रोष। उसकी आत्मा ने परमात्मा के साथ मिलन द्वारा ईश्वरीय गुण प्राप्त कर लिये होते हैं।भगवान कृश्ण के अनुसार दुख व मन की बेचैनी का कारण है स्वार्थ से पैदा हुई इच्छाऐं। ऐसी इच्छाओं से दूर रहने का एक ही रास्ता है और वह है अपने को अनुशासन में रखना व ऐसे निष्काम सेवा के कार्य करना जिस से दूसरों का भला हो। यम और नियम भी इसी मन के अनुशासन की बात करते हैं।

यह स्पष्ट है कि आसन अष्टांग योग की सीढ़ी तो है पर यहां पहुंचने से पहले व्यकित को यम और नियम का अभ्यास करना होगा वरना यह महज व्ययाम है। यह भी एक बहुत गलत धारणा है कि हमारे आज के योग गुरूओं द्वारा सिखाये कुछ 'आसन' करने से हम योगी बन जाते है। और यह उससे भी गलत धारणा है कि जो हमे ऐसे आसन करने की शिक्षा देतें है वह स्वयं योगी हैं चाहे वह बाबा रामदेव ही है।

योग कया है ?

बनवास के दौरान जब रावण सीता का हरण कर के ले गया और श्री राम लक्ष्मण के साथ खोज में भटक रहे थे तो वहो के व्यक्तियों ने कुछ आभूषण जो कि उन्हे मिले थे श्री राम को दिखाये। श्री राम ने लक्ष्मण को दिखाते हुये कहा––'' लक्ष्मण देखो क्या यह आभूषण तुम्हारी भाभी के ही है।'' लक्ष्मण श्री राम को कहते हैं––'' मैने तो भाभी के चेहरे को कभी देखा ही नहीं इसलिये गले के आभूभण नहीं पहचान पांउगा। क्योंकि मैं प्रात प्रतिदिन उनके चरण र्स्पश किया करता था इसलिये पैरों के आभूषण ही पहचान पांउगा। ऐसा आत्म संयम ही योग है।

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है
कृप्या निम्न address पर सर्म्पक करें
भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-ए चण्डीगड़.160047
0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

महात्मां हंसराज द्वारा बताये दैनिक दिनचर्या के पांच कर्म

डा महेश विद्यालंकार

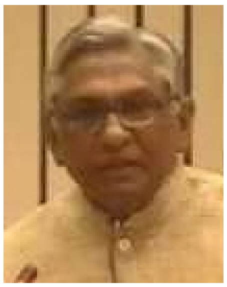

विद्या की बृद्धि अर्थात ज्ञान का प्रसार और अविद्या अर्थाथ अज्ञान का नाश जो महार्षि दयानन्द सरस्वती का उदेश्य था, उसे पूरा करने के लिये डी ए वी संस्थाओं के माध्यम से जो निर्स्वाथ कार्य महात्मा हंसराज ने किया किया उसका उदाहरण मिलना मुश्किल है। परन्तु इस से भी बड़ी जो बात उनके जीवन की छू जाती है वह थी सादगी, तप–त्याग और निस्वार्थ सेवा की भावना । वह वास्तव में सफेद कपड़ों में महात्मा थे।

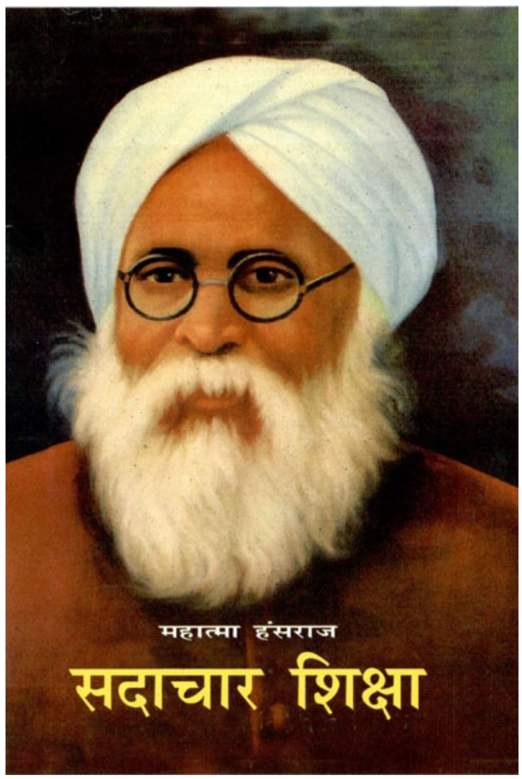

महात्मा जी ने आस्तिक, धार्मिक, भौतिक, समाजिक और राष्ट्रिय मूल्यों से ओतप्रोत और मानविय गुणों से युक्त बनने के लिये पांच सकारों का अमर संदेश दिया है जो कि हर मानव के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

1 संध्या –– प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है वह अपने जीवनदाता, निर्माता, पालक, संचालक परमेश्वर का प्रात सांय, स्मरण और धन्यवाद करें, जिसे की सन्धया कहा गया है। संसार में सब से बड़ा पापी और अपराधी वह होता है जो किये हुये उपकारों,अहसान और कृपा को न माने। सोया आदमी और मरा आदमी बराबर होता हे। जो हम प्रातः उठ गये हैं तो समझो हमारा नया जन्म हुआ है जिसने जन्म दिया है , उसके प्रति कृतज्ञता एवं धन्यवाद प्रकट करना हमारा प्रथम धर्म व कर्तव्य है।

महात्मा जी सदैव लोंगो और विद्यार्थियों को धार्मिक बनने के लिये प्रेरित करते थे। उनका कहना था––– ''प्रभु की सता, व्यवस्था, नियम अनुशासन आदि पर विश्वास करो। प्रभु की दया और कृपा के बिना हमारा जीवन एक पल भी नहीं चल सकता। संध्या करने से हमारा जीवन संभलता है, मधुरता से भर जाता है और हम सन्मार्ग से अलग नहीं होते। संध्या से आत्मबल बड़ता है और प्रभु में प्रीति बड़ती है। संध्या आत्मा का भोजन है। जैसे भोजन के बिना शरीर कमजोर हो जाता है उसी तरह से प्रभु भक्ति के बिना आत्मा कमजोर हो जाती है और ऐसे में गलत रास्ते पर भी जा सकती है।

महार्षि दयानन्द सरस्वती ने संध्या का बहुत सुन्दर संकलन किया है। पुस्तकों में उपलब्ध है। जो संस्कृत नहीं पढ़ सकते वे मन्त्रों का अर्थ पढ़े, समझें ओर धारण करें

2 स्वाध्याय –– जो पुस्तकें हमें जीवन लक्ष्य की ओर प्रेरित करें। जो हमें कर्तव्य, धर्म, जीवन के मूल्यों की ओर सचेत करें, ऐसी पुस्तकों को हर व्यक्ति लगातार अपनी दैनिक दिनचर्या का अंग उसी तरह बनाये जैसे हम भोजन खाना नहीं भूलते। अच्छी पुस्तके और मित्र औषधी का काम करते है। एकांत और अकेलेपन में पुस्तकें सब से अच्छी साथी मानी जाती हैं। स्वाध्याय का एक और अर्थ भी है , और वह है अपने आप को पढ़ना, जानना और समझना कि मैं कौन हूं? कहां से आया हूं ? क्यों आया हूं? कहां जाना है? क्या लेकर जाना है? यह सच्चा स्वाध्याय है। आज का आदमी संसार की चीजों, दूसरों के बारे में तो बहुत कुछ जानता है और लगातार प्रयास करता रहता है, पर अपने बारे में जानने की कोशिश नहीं करता। आज की जावन शैली में सच्चा स्वाध्याय बड़ी तेजी से छूटता जा रहा है। आदमी मशीन की तरह दौड़ रहा है पर उसे यह पता नहीं कि कहां जाना है। यही आज के मानव समाज की सब से बड़ी त्रासदी है। स्वाध्याय ऐसी चीज है जिस से विचार, हृदय

और जीवन बदलता हैं। स्वाध्याय से तनाव, चिन्ता, मन की अशांति, असंतोषं आदि दूर होते हैं।

यहो यह बताना आवश्यक है कि महात्मा हंसराज स्वाध्याय पर विशेष बल देते थे और बहुत स्वाध्यायशील थे।

3 सत्संग —— सत्संग की अन्नत महिमा है। सत्संग मनुष्य को डाकू से संन्त बना देता है। आचार, विचार, जीवन परिवर्तन का सत्संग से बढ़कर कोईअन्य प्रेरक साधन नहीं है। इतिहास साक्षी है कि सत्संग के चमतकारी प्रभाव से न जाने कितने लोग जो कि पहले समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखे जाते थे, सन्त, ज्ञानी, तपस्वी, त्यागी एवं महापुरूष बन गये। अमीचन्द जो कि बहुत मशहूर भजन गायक हुये उनको महर्शि दयानन्द सरस्वती के एक वाक्य——''तुम हो तो हीरे पर कीचड़ में फंसे हो '' ने बदल दिया। आज सच्चा सत्संग न मिलने के कारण जीवन और विचार नहीं बदल पा रहे।

4 संयम —— संयम जीवन का आधार है। संयम से जीवन सवच्छ, पवित्र और सवस्थ बनता हैं । जिनके जीवन में संय, नियम और अनुशासन नहीं होता उनका जीवन प्शु तुल्य बन जाता है। संयम से तन—मन विचार और आचरण संभला रहता है। आज तेजी से संयम टूट व छूट रहा है। इसी का परिणाम है मनशुय पशुता और असभ्यता की ओर बढ़ रहा है। यह बलात्कार की घटनाये पशुता तो ही है। संयम से जीवन निखरता है। वास्तव में संयम ही असली योग है। जब संयम टूटता है तो पतन के रास्ते खुल जाते हैं।

5 सेवा —— जीवन की सार्थकता परोपकार और परहित में मानी गई है। सेवा करना इतना आसान नहीं जितना कि बोलने या लिखने में लगता है। सेवा वही कर सकता है जिस में धैर्य, सहनशक्ति और दूसरों के लिये पीड़ा सहन करने की शक्ति हों। महात्मा जी का कहना था———अपने से जो बने करते चलो। जो दूसरों के काम आता है वही सच्चे अर्थ में इन्सान है। वेद कहता है सब से बड़ा सुख है दूसरों के लिये जियो। दूसरों के काम आओ। गीता का भी यही संदेश है———निस्वार्थ भाव से किये कर्म मनुष्य को मुक्ति तक पहुंचाते हैं जो दूसरों के उपकार के लिये जीवन लगा देते हैं वही अमर पद के अधिकारी बनते हैं

इस तरह महात्मा हंसराज ने पंच सकारों के माध्यम से जीवन के लिये अमूल्य संदेश दिया हैं। उनका कहना था कि जैसे सिक्ख केश, कंघा, कटार, कच्छा व कड़ा स्वरूप 5 ककार अवश्य पहनते हैं, वैसे ही चरित्र और नैतिकता के लिये प्रत्येक आर्य को उपर दिये पांच सकार अवश्य धारण करने चाहिये। आज इस की अत्यंत आवश्यकता है।

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

सुख, फूलों की तरह थोड़ी देर के लिये खिलते हैं, फिर मुरझा जातें हैं। जब कि कांटे बहुत समय तक रहते है।

खौलते हुये पानी में जैसे प्रतिबिम्ब नही देखा जा सकता, उसी प्रकार कोध की अग्नि में सच को नहीं देखा जा सकता।

केवल कर्महीन के पास ही शिकायतें होती हैं और भाग्य को कोसता है।

यह न सोचें कि आप ने उस पर दया कि बल्कि यह सोचें कि उसने आप को कल्याण का कार्य करने का अवसर दिया

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

A MAN WITH A MISSION

50-year-old Venkatraman is a small restaurant owner in Erode , Tamilnadu, with no other occupation to supplement his income. His wife is a yoga teacher and both his daughters are in college. He has hardly any savings.

But, his only concern is to see how he could continue with the Lunch at Re 1 scheme, in his small restarant, which he had launched five years back. For over five years, Venkatraman has been giving lunch every day to about thirty persons at his hotel for just Re 1 who are the attendants of poor patients in the nearby Government General Hospital. They pay just Re 1 for a meal that is priced at Rs 50 for other customers. Venkatraman has served at least 40,000 people so far @Re 1 meal still date. Though prices of food grains, oil, spices and vegetables have gone up many times in the last four years, but the one rupee lunch has remained unaffected. Venkatraman ensures that the poor get the same meal that his other customers get for Rs 50.He also gives a20 percent discount to the disabled. Venkatraman started this extraordinary effort in 2008 when a woman who had admitted her relative to the general hospital came to his mess to buy idlis for herself and another relative. When Venkat informed her that the idlis were over and suggested that she instead could take At tus, her reply was that since Attuswere more expensive, she would not have enough money to buy food for two people and that one of them would have to go hungry. That got Venkat thinking. "I must do something. Poor patients get hospital food but their caretakers and relatives stay hungry in the absence of money. They are mostly daily wage labourers.," Venkatraman thought to himself."Initially I had planned to give them a free meal. But then I felt they might feel bad perceiving it as some charity. They may also worry about the quality of the food since it is free of cost. Therefore I decided to charge a token amount of Re. 1," he explains. Though he is facing financial difficulties, Venkatraman receives solace from the divine blessings."I have the full support of my family in whatever I am doing. My second daughter scored

इरोड (तामिलनाडू) में छोटे से रैस्टोरेन्ट के मालिक श्री वैकंटरमन पिछले पांच साल से रोज 30 ऐसे व्यक्तियों को 1रू थाली के हिसाब से खाना देते है जो कि पास के अस्पताल में रोगियो के साथ उनकी देख रेख के लिए आते है।

1085 marks (out of 1200) in her Plus 2 exam. We were unable to admit her in engineering college because we could not afford the fees. But thanks to a person in Ramakrishna Math, she got a seat in a reputed engineering college in Chennai. The management has also given her a fee waiver."I have reasons to believe that such good things have happened in my life because of the small acts of service to the poor I have been doing. It gives me great satisfaction," says Venkatraman..

क्यों हम केवल सब से अच्छे (BEST) के पीछे ही भाग रहे हैं। अच्छा न होगा हम जो ठीक है Reasonably Good को ही ले कर चलें।

नीला सूद

कुछ समय पहले मैं एक शादी में गई थी। वहां एक रिश्तेदार, जो कि गुड़गांव में रहते हैं, से हाल चाल पूछ रही थी तो उनके 3 साल के बच्चे की स्कूल में दाखले की बात चली। मेरी हैरानगी की कोई सीमा नहीं रही जब उस की मां ने कहा, '' आज कल गुड़गांवा में बच्चे के दाखिले के लिये 3–4 लाख रूप्या मांग रहे हैं'' मैं हैरान 3–4 लाख की मोटी रकम से नहीं थी, हैरान इसलिये थी कि हमारे जैसा मध्यम आय वर्ग का आदमी ऐसे स्कूलों के बारे में सोचे ही क्यों। गुड़गांवा भी चंडीगढ या लुधियाना की तरह ही एक शहर है, जहाँ हर श्रेणी के लोग रहते हैं और हर श्रेणी के लोगों के बच्चे पढ़ भी रहे हैं। ऐसे में स्वभाविक है हर तरह के स्कूल भी होंगे। पर आज जो नया रूझान बन गया है उस में व्यक्ति केवल सब से अच्छे (BEST) के बारे मे ही सोचता है और अगर वह न मिले या पहुंच से बाहर हो तो अपने को अभागा मानकर दुखी होता है। बहुत कम इस बात को सोचते हैं कि हर एक स्कूल में लिमिटेड सीटस होती है जिस कारण सारे शहर के बच्चे एक ही स्कूल चाहे वह सब से अच्छा है उस में नहीं पढ़ सकते। यही नही हम दूसरे पहलूओं पर विचार करना ही नहीं चाहते। हां, एक ही पहलू है कि हमारा बच्चा शहर के best crowd में होना चाहिये।

शादीयों की बात ही ले लें। 20 साल पहले तक घर के बाहर या पास के मैदान में टैंट लगाकर अच्छी शादी हो जाती थी जो की सब के लिये सुविधाजनक होती थी। कोई यह पूछता भी न था कि शादी किस जगह कर रहे हो। आज जब मैरेज पैलेस और होटलों में शादी करने का प्रचलन शुरू हो गया है तो पहला प्रश्न यह होता है, शादी कहां कर रहे हो। यही नहीं, चाहे सुविधाजनक है या नहीं हर कोई सबसे अच्छे होटल या रिसोर्ट में शादी करवाना चाहता है। बात यहीं तक नहीं अक्सर लड़के वाले चाहते हैं कि उनकी और उनके लड़के की यह ईच्छा और शान शोकत लड़की वालों के खर्च पर पूरी हो चाहे अपनी औकात कुछ भी न हो। इन्ही कारणों से उसी के लिये कई रिश्ते तक टूट रहें हैं या शादी से पहले ही दरार पड़ रही है। अव जरा सोचिए शादी एक ऐसा संस्कार है जो दो आत्माओं को, दो परिवारों को जोडता है। एक ऐसा संस्कार जिसका प्रभाव आने वाले संतान व वंश पर है पर उसको हम तोल रहें हैं दो तीन घंटे के संस्कार ceremony के साथ। बहुत बार देखने को मिला है,

शादि या पैसे की नुमाईश

शादी का स्थान venue चुनने में तो महीनो लगा दिये और बारात रात को 12 बजे ले कर आये, जब की सब खा पी कर चले गये होते है। क्या महत्व रह गया venue चुनाव का। अच्छा न हो कि हमारी सोच यह हो कि कोई भी साफ सुथरी जगह जो दोनो वर व बधु पक्ष को सुविधा जनक हो वहां पर बिना अधिक खर्च किये शादी कर दी जाये।

इसका सब से बड़ा कारण है आज हम में अधिक भेड़ चाल के आदी हो गयें हैं। विचार, मनन व चिन्तन बिल्कुल खत्म हो गया है। विचार, मनन व चिन्तन क्या है। स्कूल का उदाहरण ही ले लें। पहला प्रश्न.– क्या शहर के सब बच्चे जिसे हम शहर का बेहतरीन स्कूल कहते हैं उस में पढ़ सकते हैं? जवाब है–– नहीं, बेहतरीन स्कूल में सीमित सीटें हैं । दूसरा प्रश्न–– क्या elite schools जिन का बड़ नाम होता है में पढ़ने वाले ही पढ़ाई या दूसरे क्षेत्रों में उपर है। जवाब है–– नहीं, दूसरे स्कूलों के बच्चे भी हर क्षेत्र में आगे देखे जा सकते हैं। तीसरा प्रश्न–––जिन व्यक्तियों ने अपने अपने क्षेत्र में नाम कमाया है क्या वह सभी elite schools में ही पढें हैं? फिर जवाब है नहीं। तो ऐसे में सब से अच्छे स्कूल के पीछे पड़ने के स्थान पर क्यों न हम ऐसा कोई स्कूल चुन लें जो कि बच्चे को सुविधाजनक हो, हमारी आय के अनुरूप हो। जरा सोचिये उस बेहतरीन स्कूल का क्या करना जिसके लिये रोज वच्चे को दो घंटे बस में ही बिताने पड़े जब की वही समय वह पढ़ाई व खेलकूद पर दे सकता है। उस बेहतरीन स्कूल का क्या करना जिस में आय का बड़ा हिस्सा बच्चे की फीस, बस किराया और मोडल इत्यादि बनाने में चला जाए और घर में पैसे की किलत के कारण तनाव रहे।

स्कूल सब के लिए

यह मान कर चलें कि हमें हर चीज हमारे नजरिये के अनुसार सब से अच्छी नहीं मिल सकती। घर में हर रोज खाना हर एक सदस्य के अनुसार सब से अच्छा नहीं होता पर खाते हैं। न वह (Boss) अफसर जिसके नीचे आप काम करते हैं हर बार आप के अनुसार सब से अच्छा मिलता है और न ही आपके नीचे काम करने वाले सभी बहुत अच्छे होते हैं। अगर हर चीज में, अपने अनुसार सब से अच्छा ढूंढने की सोच पड़ गई है, तो हम अपने आप को तनाव में पायेंगे और दूसरों के लिये भी ऐसी तनाव की स्थिती बना देगें। अक्सर देखा गया है बच्चे पर प्रथम आने का दबाव न केवल उसे तनाव में डाल देता है पर उसे कई और उतनी ही आवश्यक क्रियाओं से वंचित कर देता है।

ऐसे में अच्छा न होगा हम जो ठीक है reasonably good व reasonably fair को ही ले कर चलें। भेड़चाल में न पढ़े। आप की सहेली का वच्चा जिस स्कूल में जा रहा है यह ज़रूरी नहीं आप भी लोकलाज के लिये उसी स्कूल में भेजें। आप की व आप के बच्चे की अपनी शक्तियो व कमजो़रियां हैं जो कि ज़रूरी नहीं आप की सहेली व उसके बच्चे की हों। इसे अपना निर्णय बनाईये। निम्न कुछ बातें अगर हम जीवन में लेकर चलेंगे तो हमारा जीवन तनाव से दूर और खुश रहेगा।

1 दूसरों की भौतिक वस्तुओं और सुखों से प्रभावित न हों आम व्यक्ति जो अध्यात्मवाद से दूर होता है, वह दूसरों की भौतिक वस्तुओं और सुखों से प्रभावित रहता है। अगर दूसरे के पास BMW कार है तो वह उससे भी मंहगी कार उसको प्रभावित करने के लिये लेने की सोचता है, चाहे उसे भारी कर्जा ही क्यों न लेना पड़े।आज के मनुष्य के तनाव का मुख्य कारण ही यह है। इसलिये अच्छा होगा कि हम दूसरों की भौतिक वस्तुओं और सुखों से प्रभावित न हों।

2 जो भी मन को भा गया उसे खरीदने की न सोंचे हर अच्छी चीज ज़रूरी नहीं कि आप के लिये ज़रूरत की हो। खरीदने से पहले इस पहलू से सोंचे। अक्सर हम बहुत सी ऐसी मन को भाने वाली वस्तुंए खरीद लेतें हैं जो कि प्रयोग नहीं करते। Do your Needs Vs Wants analysis

3 क्रेडिट कार्ड का प्रयोग कम से कम करें अवश्यक

Credit Cards Usage –– कर्जा चाहे किसी भी तरह का हो वह व्यक्ति की सेहत पर विपरीत असर डालता है।

4 भविष्य को सुरक्षित करें पर वर्तमान को खराब न करें बहुत सारी बीमा की पोलिसी लेकर या अपनी हैसियत से बड़ी पोलिसी लेना बुद्धिमता नहीं। उस कल के सुख का जिसे शायद आप देखें या न देंखे, शायद भोंगे भी न और बच्चों के ही काम आयें, कोई फायदा नहीं जिस के लिये आप का वर्तमान तंगी का गुजरे।

5 धन सम्पदा से न किसी भी व्यक्ति को न मापें अकसर हम अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों के बड़पन (stature) का माप उनके पास जो धन सम्पदा नजर आती है उस से करते है––जैसे की कार, बंगला या उसकी शान शौकत। इसके स्थान पर उस के जीवन के मूल्यों की और देंखें। जब हम धन सम्पदा को ही माप दण्ड बना कर चलते हैं तो अपने जीवन में भी उन्ही वस्तुओं को महत्व देते हुये उन्ही की तरह बनने की कोशिश में अपने आप को कठिन परिथिति में ले आतें हैं और सब से खराब बात यह होती है कि हमारे बच्चे भी उसी को जीवन में उन्नती का माप दण्ड बना लेते हैं।

इसी तरह जीवन में किफायत से रहना, भविष्य के लिये धन जोड़ना अच्छी बात है पर हर समय धन के बारे में न सोंचे। इस तरह की सोच घरों में आपसी प्यार को खत्म कर देती है।अध्यात्मवाद और धन दोनों के दरवाजे खुले रहने चाहिये।

6 इन्कार करना सीखें आज आप ऐसे दौर से गुजर रहें हैं जब कि 60ः नोकरी करने वालों से उनके मालिक यह उम्मीद करते है कि वह दूसरों की जेव से पैसे निकाल कर लायें, ऐसे में ज़रूरी है कि हमारे सामने जो भी लुभावनी योजनायें पेश की जाती है, हम उन्हें अच्छी तरह परख कर देंखे तभी हां कहें। और इन्कार करना भी सीखें। Do your "Needs Vs Wants" analysis. Careful spending is always recommended.

7 मिलनसार और व्यवहारकुशल होना आवश्यक है पर साथ में ही यह भी आवश्यक है कि कुछ समय हम अपने लिये, अपने जीवन साथी के लिये व बच्चें के लिये भी निकालें। मोवाईल और टैलिफोन उसकी पूर्ती नहीं कर सकते। दिन में कुछ समय के लिये मौन बैठकर मनन करना बहुत आवश्यक है। Reduce too much social gatherings and spend quality time with your spouse and kids for empowering relationships

8 यह ठीक है कि टैलिविजन और इन्टरनैट हमारे जीवन के आवश्यक अंग बन गये है। पर इन्हें किताबों का स्थान देना गलत है। जब कि आप कम्पयूटर पर काम कर तनाव का अनुभव करते है, किताव पढ़ने पर व्यक्ति ऐसा महसूस नहीं करता। खुश रहने के लिये कितावें पढ़ने का कोइ मुकावला नहीं।

9 प्रकृति के साथ समय अवश्य बितायें मानसिक और शारिरक रूप से स्वस्थ रहने के लिये यह आवश्यक है कि दिन में कुछ समय हम खुले में प्रकृति के साथ भी वितायें।

9217970381

बांगलादेश मुसलमान देश होने के बाबजूद महिला सशक्तिकरण में भारत से कहीं आगे है

जो तथ्य सामने आते हैं वह यही बताते हैं कि चाहे बांगलादेश मुसलमान देश है पर स्त्री सशक्तिकरण के बारे में वह भारत से कहीं आगे है। न केवल वहां की प्रधानमन्त्री एक महिला है बल्कि पांच महत्वपूर्ण मन्त्री भी महिलांए है। यही नहीं विरोद्ध पक्ष की सब से बड़ी नेता भी एक स्त्री है।
बंगलादेश ने स्त्री शिक्षा, परिवार नियोजन और शिशु रक्षा और पालन में भारत और पाकिस्तान दोनों को ही बहुत पीछे छोड़ दिया है।

यह बात इस बात को बताती है कि महत्वपूर्ण यह है कि देश के शासक धर्म और साम्प्रदाय का प्रयाोग कैसे करते हैं। हमारे देश के शासको ने साम्प्रदाय का प्रयोग केवल वोटें बटोरने के लिये ही किया है जबकि पाकिस्तान ने दहशत फैलाने के लिये।

EXCELLENCE

Prof. S P Puri

The will to win, the desire to succeed, the urge to reach your full potential... these were the keys that will unlock the door to personal excellence. --Confucius

All labor that uplifts humanity has dignity and importance and should be undertaken with painstaking excellence.--Martin Luther King Jr

Perfection is not attainable, but if we chase perfection we can catch excellence.--Vince Lombardi

Example of Excellence

If a man is called to be street sweeper, he should sweep streets even as a Michelangelo painted, or Beethoven composed music or Shakespeare wrote poetry. He sweeps streets so well that all the hosts of heaven and earth will pause to say, "Here lived a great sweeper who did his job well."--Martin Luther King Jr

Excellence is a void and not a harbor, since there is no job which cannot be done better. An individual who aspires to be excellent goes an extra mile than what he is capable of. The world takes notice of those works only that had been done with utmost devotion and nobody bothers about one that is shoddy or half complete.

Perfection is unattainable since as we rise higher, our horizon is wider and we have to strive much harder to make up to it. However, the best anyone can do is to do his best. A famous couplet from Alexander Pope, is

Fame or shame from no condition, rise Act well your part, there all the honor lies

It has been seen umpteen times that buildings and bridges collapse while being built and bury the workers under the debris, because the builder was dishonest, compromised with excellence and made use of sub-standard material in the construction.

The majority of disasters on land or sea which are caused by half-done, blotched, blundering work ignoring excellence, result in the loss of precious lives. These are a result of a slipshod work done by careless and indifferent workers. Carelessness is no less a crime than deliberate criminality.

If everyone puts his heart and soul into his work and does it to a complete finish, it will not only reduce the loss of life, the crippling of men and women, but also give a higher quality of manhood and womanhood.

A lot of people choose to aim at quantity rather than quality. They undertake too much and don't do it well. They forget that the emergence of the whole man that comes from doing one thing absolutely right is totally missing in the process of doing too many things. But a man of character will endeavor to attain excellence in the work he is engaged in, rather than spreading his energy sparsely thin over too many jobs.

What distinguishes two people is the difference in their capacities to imagine. What can be visualized on the mental plane surely lies in the plane of reality.

The ultimate hallmark of anyone is the quality of his creation. **0172-2691442**

क़लमदान में भरे अनुपयोगी पैनों की तरह ही ज़रूरी है मन रूपी क़लमदान में व्याप्त अनुपयोगी विचारों से भी मुक्ति

सीता राम गुप्ता,

कुछ दिन पहले की बात है। एक मित्र के पास बैठा था। किसी संदर्भ में कुछ लिखने की आवश्यकता पड़ी। मेरे पास काग़ज़–पैन नहीं थे। मित्र से काग़ज़ व पैन देने की प्रार्थना की तो वो काग़ज़ों के पैड के साथ पूरा क़लमदान ही उठा लाए। क़लमदान बहुत ही सुंदर व कलात्मक था। क़लमदान में दर्जन से भी कुछ ज़्यादा पैन–पैंसिलें रखी हुई थीं। कई पैन भी महँगी कंपनियों के थे। लिखने के लिए एक पैन उठाया और लिखने का प्रयास किया लेकिन वह चला ही नहीं। दूसरा पैन उठाया तो वह भी नहीं चला क्योंकि उसमें रिफिल ही नहीं था। तीसरा पैन उठाया तो वह रुक–रुक कर चल रहा था। चौथा पैन उठाया तो दबाव पड़ते ही उसका रिफिल बाहर आ गया। पैंसिल देखी तो उसका सिक्का ही टूटा हुआ था। क़लमदान में रखे सारे पैन–पैंसिलों की जाँच करने के बाद पाया कि सिर्फ़ एक पैन ऐसा था जो थोड़ा ठीक से लिख सकता था अतः उससे किसी तरह अपना काम चला लिया।

आज ही अपने क़लमदान की जाँच कीजिए और न चलने वाले बेकार पैन–पैंसिलों की मरम्मत कर डालिए। जिनमें लैड या रिफिल समाप्त हो गया है उनमें नया लैड व रिफिल डालिए। जो किसी भी हालत में लिखने के योग्य नहीं हैं उन्हें फैंक दीजिए अन्यथा वो बार–बार काम में बाधा डालेंगे। यदि क़लमदान में केवल एक ही पैन है और वो सुचारु रूप से कार्य कर रहा है तो एक ही काफी है क्योंकि उससे मनचाहा व उपयोगी कार्य करना संभव है। कुछ ऐसी ही स्थिति हमारे मन की भी होती है। हमारे मन में भी कई बार क़लमदान में रखे टूटे–फूटे नकारा पैन–पैंसिलों की तरह ही असंख्य निरर्थक विचार भरे रहते है जो न केवल अनुपयोगी होते हैं अपितु घातक भी होते हैं। ये उपयोगी विचार ही होते हैं जो हमारे जीवन के लिए बेहतर स्थितियों का निर्माण करते हैं। निरर्थक विचार उन्हें स्पष्ट होकर उभरने नहीं देते, उन्हें वास्तविकता में परिवर्तित होने से रोक देते हैं जो हमारे सकारात्मक विकास में बहुत बड़ी बाधा है।

एक ख़राब पैन न केवल काम नहीं करता अपितु जब हम काम करने के लिए उसे उठाते हैं और जब काम नहीं होता तो खीझ पैदा होती है। खीझ के कारण तनाव उत्पन्न होता है और तनाव से कार्यक्षमता का ह्रास होता है। यदि क़लमदान में ऐसे ही आठ–दस पैन रखे होंगे तो कार्य पूरा होना संदिग्ध ही नहीं असंभव है। बहुत सारे ख़राब पैन–पैंसिलों में से सही पैन या पैंसिल को खोजने में न केवल समय की बर्बादी होती है अपितु काम में बाधा भी उत्पन्न हो जाती है। लेखन की

एक मुरझा गया फूल निकालना ही पड़ता है तभी बाकी फूलो की शोभा रहती है।

गुणवत्ता पर भी प्रभाव पड़ता है। हमारे विचार भी हमारे जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। असंख्य निरर्थक विचार मन में व्याप्त उपयोगी विचारों को दबा देते हैं। अनुपयागी विचारों के कारण मानसिक द्वंद्व उत्पन्न होता है और जिससे हमारे जीवन की गुणवत्ता सबसे ज़्यादा प्रभावित होती है। इससे हमारी विचार प्रक्रिया बाधित होकर सही समय पर सही निर्णय लेने में भी बाधा उत्पन्न होती है।

घर में रखे भौतिक क़लमदान की तरह ही आज ही अपने मन

शेष पृष्ठ 16 पर

मनुष्य योनी का मुख्य उदेश्य ही उपासना द्वारा परमात्मा के साथ एक हो जाना है

गुरू अर्जन देव जी

हे मनुष्य तुम्हे मनुष्य की योनी ही इस लिये मिली है ताकी तुम संसार के रचयिता परमात्मा को पा सको। इस के लिये तुम्हें अपने मिथ्या अंहकार, वासनाओं को त्याग कर अपने अन्दर ही झांकना हैं।

मनुष्य का तब तक परमात्मा के साथ मेल सम्भव नहीं जब तक वह इन पांच शत्रुओं——काम, क्रोद्ध, लोभ, मोह और अंहकार से घिरा हुआ है। इन को दूर करने का एक ही उपाय है। उस निराकार की उपासना, निष्काम सेवा और सब प्राणियों से प्यार और करूणा।

मनुष्य योनी को सब से उतम इस लिये ही माना गया है क्योंकि मनुष्य ही परमात्मा तक पहुच कर जन्म मरण के चक्र से छूट सकता है। बाकी सब योनियां भोग योनियां है, उन्हें ईश्वर को पाने का अवसर नहीं मिलता।

यह गुरू अर्जन देव जी की वाणी गुरू ग्रंथ साहिब से है। एक बात स्पष्ट है कि जो बातें भी भारत में जन्में महान आत्माओं ने कहीं है वे सब वेद की ही वाणी है। दूसरे मतों वालों ने इन बातों को लोंगों को समझाने के लिये बहुत ही सरल और लोगों को समझ आने वाली भाषा में उनक` सामने रखा । परिणाम यह है कि लोग उन की और झुकते गये ।हम आर्य समाजी जिन्होने वेदों को ढूंढा, इस संस्कृत के पण्डितों की बातों में आकर संस्कृत और भाषा के चक्कर में पढ़ गये, परिणाम लोग हमसे अलग हो कर दूसरे मतों में जाना शुरू हो गये।

महत्वपूर्ण यह नहीं कि हम आर्य समाजी रहें, महत्वपूर्ण यह है कि हमारी अगली पीढ़ी आर्य समाज आये। अगर कुछ बृद्ध और एक पण्डित सत्संग के नाम पर हवन करते रहे जैसा कि अधिकतर आर्य समाजों में हो रहा है उसका कोई फायदा नहीं। यह तो केवल आत्म तुष्टि है। अच्छा हो हम इस बात को समझें। मैं पिछले 40 साल से देख रहां हूं जेसे ही किसी बृद्ध आर्यसमाजी की मृत्यु होती है उस परिवार की वहीं कढी खत्म हो जाती है। उसके आगे के परिवार का कोइ भी सदस्य नजर नहीं आता। यह तो आर्यसमाजी परिवारों का हाल है। दूसरों को आर्य बनाने की बात तो बाद में आती है।

पृष्ठ 16 का शेष

रूपी क़लमदान की भी जाँच कीजिए और उसमें व्याप्त नकारात्मक भाव रूपी टूटे–फूटे नकारा पैन–पैंसिलों से छुटकारा पाकर उनके स्थान पर सकारात्मक उपयोगी विचारों को पुष्ट कीजिए। जिस प्रकार मात्र एक ही पैन के ठीक होने से किसी भी तरह का लेखन कार्य सुचारु रूप से करना संभव है उसी तरह से मन में भी यदि केवल एक ही सार्थक व उपयोगी विचार है और वो वास्तविकता में परिवर्तित हो जाता है तो ऐसी अवस्था में अन्य उपयोगी विचार स्वयं मन में उत्पन्न हो कर जीवन की दशा को उत्तम बनाने में सहायक होंगे। अपने क़लमदान में रखे अनुपयोगी पैनों की तरह ही मन में उठने वाले सभी अनुपयोगी व नकारात्मक भावों की जाँच कर उन्हें सँवारने व उन्हें निरंतर उपयोगी व सार्थक–सकारात्मक भावों में परिवर्तित कर देने में ही निहित है जीवन का वास्तविक उत्थान व उत्कर्श।

फोन नं 09555622323 Email : srgupta54@yahoo.co.in

He learns most who feels he needs to learn

Malvika Sood

Once, a man keen to learn music approached a master and after showing his intent asked his fees. The master told him that he would charge 100 Coins. The man thought for a while, then made a supplication, “Master, I already have some knowledge of music so will it not be possible for you to reduce your fee?” The Master gave a piercing glance and then said, “If that is the case then it will be 200 Coins” Perplexed, the seeker said, “Don't you think, it is irrational. A man who knows nothing is charged 100 Coins and the one who already knows something has to pay 200 Coins”

The master smiled and said, “To me, the one who knows nothing is better than who knows something because first I will have to spend time to erase out what he knows. Only then my tutorage can be of help to him.”

This reminds me of similar incident from the life of Maharishi Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj. When he approached his Guru Swami Virjanand for his tutorage, the latter asked him to throw all the books that he had in to river Ganga only then he'd teach him.

Knowledge is knowledge, irrespective of the source, then why the new Guru should expect the disciple to forget what he knew already. I got the answer when I read the story of a Professor who went to a Jain sage to seek spiritual knowledge. Prof. engaged the sage in a lengthy introduction about himself and his achievements. The Sage who had other devotees in audience, asked one of his disciples to get tea for the Professor. The sage with his gaze fixed on the Professor started pouring tea in to the cup and soon it was full and tea started overflowing. Professor thought that the sage was unmindful of his action so he immediately drew his attention. Sage just laughed and then spoke, “Look, as it is not possible to put more tea in a cup which is full to the brim. Likewise, it is not possible to teach a disciple who claims to know much.”

Crux is, no one expects you to erase from your mind what you have already acquired or happen to know but when you go to a Master to learn some thing then don't tomtom that you already know much. Have a feeling that you know a little and much needed to be learnt.

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

वैदिक पंचांग

आचार्य दार्शनेय लोकेश

श्री मोहन कृति आर्श तिथि पत्रक ही ऐसा एक पंचांग है जो वेद द्वारा निर्दिश्ट ऋतुबद्ध मास पक्षादि क्रम पर आधारित होने से वास्तव में ही एक वैदिक पंचांग है। कब कौन ऋतु प्रारम्भ या समाप्त होनी है और किस ऋतु के कौन कौन से सौर अथवा चान्द्र मास–पक्षादि होते हैं इस सब के लिये वेदोपदेश उपलब्ध है। उदाहरणार्थ –यजुर्वेद 13/25 इत्यादि मन्त्र देख सकते हैं। वेदो में सौर और चान्द्र मासों के नाम एक ही हैं क्योंकि चान्द्र मास सदैव सौर मासों पर ही आधारित हैं। वेदों में सूर्य को ही ऋतुओं का निर्माता कहा गया है। सौरमासों की प्रधानता है और इसी कारण से चान्द्र मासों के अलग नाम नहीं देखे गये हैं।

संवत सदैव दो अयनों, जिनमें से प्रत्येक 3 ऋतुओं और प्रत्येक ऋतु दो सौर मासों में विभक्त होती है। इन अयनों, ऋतुओं और तदन्तर्गत मासों के आरम्भ होने के ठीक–ठीक सिद्धान्त हैं। जिनकी गणित भी हो सकती है और उनको देखा या अनुभव भी किया जा सकता है। दोनों अयन बिन्दु (अयन अर्थात उत्तरायण एवं दक्षिणायण परिवर्तन के बिन्दु) और वसन्त एवं शरद, दो सम्पात बिन्दु (गोलार्द्धों अर्थात उत्तरी एवं दक्षिणी गोलार्द्ध के परिवर्तन के बिन्दु) सारी पंचांग गणना के आधार बिन्दु हैं। चार ऋतुयें ऐसी हैं जो अयन बिन्दुओं पर ही समाप्त एवं प्रारम्भ होती हैं जबकि दो ऋतुयें (वसन्त एवं शरद ऋतु) ऐसी हैं जो सम्पात बिन्दुओं पर सम विभाजित होती हैं। अनिवार्य तौर पर, ये सभी बिन्दु सौर मासों की संक्रान्तियां भी होती हैं। ये ही वैदिक सिद्धान्त है। ये सिद्धान्त ठीक–ठीक पालन करने के कारण ही श्री मोहन कृति आर्श तिथि पत्रक एक वास्तविक वैदिक पंचांग है। वर्तमान में प्रचलित सभी पंचांग इस सिद्धान्त के विरूद्ध हैं। वेद विरूद्ध अर्थात अवैदिक हैं।

पंचांग वैदिक संस्कृति का एक नियामक तत्व है क्योंकि इनके बिना आापको दिवस, रात्रि, पक्ष, मास, ऋतु, अयन और संवत संक्रान्ति की काल सन्धि की जानकारी नहीं हो सकती। इनमें जो सन्ध्या यज्ञादि का विशेश निर्देश वेद देता है (अथर्ववेद 3/10/8–9)। आप शुद्ध पंचांग के अभाव में या आजकल के उपलब्ध अशुद्ध पंचांगों के चलते उस निर्देश का पालन कर ही नहीं सकते। यह बात जितनी शीघ्र और जितनी अच्छी तरह से आपकी समझ आ जाये उतना ही कल्याण है। क्योंकि यही हम सब का, वेदों के अनुरूप, उचित व्यवहार भी है।

महिर्ष स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाश्य भूमिका में स्पश्ट करते हुये, आप को नित्य संकल्प पाठ पूर्वक काल गणना को पुष्ट और परिपालित रखने के सांस्कृतिक दायित्व का, स्मरण दिलाते हुये जिस तिथिपत्रक का उल्लेख किया है वही तिथिपत्रक, पंचांग होता है।

हम ऐसा प्रबन्धन करने जा रहे हैं जिसके अन्तर्गत जून से सितम्बर 2015 में, प्रत्येक मास में एक बार हमारे निवास पर निशुल्क पंचांग–प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाये। पंचांग देखने समझने का, संकल्प पाठ को समझने का और ज्योतिष की दिशा में अपने कदम बढ़ाने का, सभी के लिये यह एक सुन्दर अवसर होगा। मेरे निवास पर आप मेरे अतिथि होंगे। ज्ञातव्य है कि इन सभी आर्ष पत्रकों में वैदिक मासों – मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभस्, नभस्य, ईश, ऊर्ज, सहस्, सहस्य, तपस् एवं तपस्य (चैत्र, वैशाख, ज्यैश्ठ, आशाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौश माघ एवं फाल्गुन) को वसन्त, ग्रीश्म, वर्शा, शरद, हेमन्त,एवं शशिर ऋतुओं अनुरूप यथार्थ संक्रान्तियों से जोड़कर दिखाया गया है। भित्ति पत्रक (दीवाल कलैण्डर) में भी प्रत्येक दिन के लिये प्रथम पंक्ति में क्रमशः सूर्योदय सूर्यास्त, चन्द्रोदय व चन्द्रास्त दिये गये हैं। पुनः चान्द्र मास, पक्ष, तिथि एवं तिथि का समाप्ति काल दिया गया है। वैदिक मासों के अनुसार बड़े अंको में आंग्ल कलैण्डर के महीने व दिनांक भी दिये गये हैं। अन्तिम पंक्ति में नक्षत्र एवं नक्षत्रों की समाप्ति का समय दिया गया है। वैदिक मासों की विशेषता के अतिरिक्त एक खास बात यह भी है कि किसी दिन यदि 3 नक्षत्रों का योग बन रहा है तो उन तीनों ही नक्षत्रों का समय आप को इस भित्ति पत्रक (दीवाल कलैण्डर) में भी ठीक ठीक दिया हुआ मिलेगा, जो कि भारतवर्ष के किसी भी कलैण्डर या पंचांग में आपको नहीं मिल सकता। सभी समय भरतीय मानक समयमान में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली हेतु गणित हैं। घंण्टा मिनट में दिया गया समय सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक क्रमशः वृद्धि क्रम से है। अन्त में सम्बद्ध मास से सन्दर्भित शुद्ध शास्त्रीय निर्धारण के अनुरूप मुख्य व्रत–पर्व–त्यौहार, जयन्तियों एवं पुण्य तिथियों को दिखाया गया है। ज्ञातव्य है कि इस संवत (2072) में कोई मलमास नहीं है।

सम्पर्क करें नन्दन सिंह रावत, 09410509339 कोटद्वार, उत्तराखण्ड

द्रोपदी का चीरहरण, एक मनघड़न्त घटना

स्वामी विवेकानन्द परिवाचक रोजड़ वाले

स्वामी विवेकानन्द परिवाचक अपनी पुस्तक उत्कृष्ठ शंका समाधान में लिखतें हैं––'मेरे अनुसार महाभारत में नौ सौ प्रतिशत मिलावट है। जब महाभारत मूल रूप में व्यास जी ने लिखा तो उस में केवल 10000 श्लोक थे और इसका नाम जय था और फिर बाद में हुआ 'भारत' । और जब इस की कथा होने लगी तो पडित अपनी तरफ से श्लोक डालने लगे और बड़ते बड़ते एक लाख हो गये। ''

''जहां तक द्रोपदी के चीरहरण की घटना का प्रश्न है मेरे अनुसार यह सरासर मिलावठ है। न तो ऐसा कुछ हुआ और नही हो सकता है। ''

''जब कि सामान्य व्यक्ति जब अपनी पत्नि की इज्जत पर हमला होते देखता है तो मरने मिटने को तैयार हो जाता है तो पांच पांडव जो कि बहुत बड़े योद्धा थे कैसे इस को सहन कर सकते थे। इसके लिये वे अपनी जान भी न्योछावर कर देते। इसलिये चीरहरण की घठना तो कौरी कल्पना है। इसी तरह जूए में युधिष्टर जैसे मेधा बुद्धि वाले व्यक्ति द्वारा अपनी पत्नि द्रोपदी को जूए में बाजी पर लगा देना भी दिमाग में बैठता नहीं। फिर द्रोपदी स्वयं एक विदूशी राजकुमारी थी वह उस बात को कैसे सहन कर लेती।''

''आगे लिखा जाता है कि भीष्म जैसा योद्धा जो कि उस सभा मे सब से बड़ी आयु का था और सब के लिये पूजनीय था इस लिये विरोध न कर पाया क्योंकि वह दुर्योधन जैसे बुरे व्यक्ति का अन्न खाता था इसलिये उस की बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी। हम सब भी तो दूषित अन्न खाते हैं तो हमारी सब की बुद्धि भ्रष्ट क्यों नहीं हो जाती।

सम्पादक की सोच

महाभारत ही नहीं, कोई भी प्राचीन ग्रन्थ बिना मिलावट के नहीं। इसका मुख्य कारण है मनुष्य स्वभाव से महत्वाकांशी, लोकातृष्णा वाला और लोभी है, हां योगी की बात अलग है। भारत का पडिंत वर्ग, जिसमें सभी आते हैं हमारे आर्य समाज के पंडित भी, धर्म का प्रयोग समाज को सुधारने की अपेक्षा अपने धन बटोरने, अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा के लिये करता रहा जिस कारण मिलावट होना स्वभाविक है। स्वामी दयानन्द जैसा कोई लाखों में एक होता है जो कि इन कमजोरियों पर विजय पा चुका होता है वरना धर्म का प्रयोग धन बटोरने, अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा के लिय ही होता रहा है और होता रहेगा। हमारे हिन्दु धर्म में तो यह बात खुल कर की जाती है क्योकिं कोई सुप्रीम अथोरटी इसको रोकने वाली नहीं हैं जैसे की इसलाम में या ईसाई धर्म में है। कुर्वानी देना तो बहुत बाद की बात है कोई आवाज तक नहीं उठाता। आज तक सभी रावण को बुरा कहते है, उसका पुतला जलाते रहें हैं अब कुछ लोगों ने रावण की पूजा शुरू कर दी और मन्दिर में पूजने के लिये मूर्ती भी खड़ी कर दी। अपनी आस्था की बात है कह कर किसी भी अपवाद को खत्म कर दिया जाता है।

आप दूर क्यों जाते हैं, आर्य समाज को बने तो 150 साल भी

पूरे नहीं हुये। अलग अलग लोगों ने अपने धन्धे व कमाई के लिये अपने अपने ढंग से इस को लोगों के सामने पेश करना शुरू कर दिया है

गुरूकुल वालों ने पौराणिक लोंगों से यह सीख लेकर कि कर्मकाण्ड के बिना कमाई कहां है, आर्य समाज जैसी संस्था जो कि वेद के सही ज्ञान को जनता के सामने रख कर समाजिक बुराईयों को दूर करने के लिये एक अन्दोलन था उस की पहचान हवन बना दी। जम कर कमाई करते है। आज आर्य समाज में रह ही कर्मकाण्ड गया है। दिल्ली आर्य

प्रदेशिक सभा ने दिल्ली में ही ऐसी बहुत सी नकली आर्य समाजें बन्द करवाई जो कि लोभी आचार्यों ने घर से भाग कर शादी करने वालों के विवाह संस्कार के लिये घर में ही बनाई हुई थी । आर्य समाज के नाम पर घर पर ही एक यज्ञ शाला बना रखी थी जहां मोटी रकम लेकर ऐसे घर से भाग कर आये युवक युवतियों की शादी की जाती हैं। यही हाल बाकी बड़े शहरों का है। हमारे चंडीगढ़ में एक आर्य समाज के प्रधान ने जो कि पेशे से बकील थे, घर पर ही यज्ञशाला बना रखी थी और इस तरह की शादियां करवा कर लाखों रूप्ये कमाते थे, एक दो पडितों की भी लाटरी लगी हुई थी । हां साल में एक बार इस पाप की कमाई से कुछ हजार खर्च कर गरीबों में सिलाई मशीने बांट कर वाह वाह लूट लेते थे। नाम स्वामी दयानन्द का लेते हैं कि उन्होने ही कहा है कि युवक युवती को अपनी पसन्द की शादी करने का अधिकार है, परन्तु यह नहीं देखते कि दयानन्द ने उसके साथ 100 बातें और भी कहीं हैं। इस तरह अपने फायदे के लिये महान व्यक्तियों की कहीं बातों से खिलवाड़ करना सदा से चला आ रहा हैं। इसी कारण सभी धामिर्क ग्रंथों में मिलावट आई है।

दूसरी बात यह है कि कुछ ग्रथों को अच्छी नीती की बातें उजागर करने के लिये जान बूझ कर मनघड़न्त कहानियों का रूप दिया गया पर समय बीतने के साथ धर्म गुरूओं ने उन्हे सच्ची बातें कह कर बताना शुरू कर दिया।

समाधान

इस का समाधान है। हर एक बात को तर्क और संदेह से देंखें जैसे स्वामी दयानन्द, गौतम बुद्ध और कई और महान पुरूषों ने देखा। उदाहरण के लिये दस सिरों वाला व्यक्ति, पशु के सिर वाला व्यक्ति आज नजर नहीं आता तो पहले भी नहीं था, इस लिये इस को सत्य मानना बेबकूफी है।

दूसरा, उसी बात को माने जो आपको ठीक लगती है वरना भेड़चाल में न पड़ें। जो बात आपको तर्क द्वारा ठीक नहीं लगती उसे न माने। चाहे कोई भी कहें। उदाहरण के लिये ईश्वर के साथ जुड़ने का सब से अच्दा तारिका ब्रहम यज्ञ, सन्धया है मैं उसे ही मानूंगा। अग्निहोत्र इस का स्थान नहीं ले सकता। आज के समय में परियावरण शुद्ध करने में में भी इस की व्यवहारिकता नहीं है। पडित इस की वकालत इस लिये करते हैं क्योंकि उनक े लिये कमाई है। हां अपने घर में वे भी नहीं करते। जहां दक्षिणा मिलती है वहीं करते है।

केरल प्रांत में खोले गये एक गुरूकुल का दृश्य।

केरल प्रांत में खोले गये एक गुरूकुल का दृश्य। क्या आप अपने बच्चों को ऐसे गुरूकुलों में पढ़ने भेज देंगे । अगर नही तो गरीबों के बच्चे क्यों? जब हम आर्य समाज के नाम पर 21वी सदी में यह सब पेश करेंगे तो कौन आर्य समाज आयेगा। मत दिजीये ऐसे लोंगों ओर संस्थाओं को प्रोत्साहन। यह आर्य समाज जैसी प्रगतीशील संस्था को खत्म करने में लगें हे। महर्शि दयानंद तो बहुत प्रगतीशील थे। उन्होने अपने जीवनकाल में **Oxford qualified'** श्याम जी कृशण वर्मा को वैदिक विचारधारा को फैलाने के लिये चुना था। यही नहीं जो उनके शुरू के अनुयाई लाला लाजपतराय, महातमा हंसराज, गुरूदत विद्यार्थी आदि थे वे सभी उस समय की अंग्रजी शिक्षा से गुजरे हुये थे। स्वयं स्वामी दयानंद अंग्रेजी के प्रवल समर्थक थे।

आप अंग्रेजी स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर, पैंट कोट टाई लगाकर भी आर्यसमाजी बन सकते हैं। उसके लिये लम्बा कुर्ता–धोती पहनने और संस्कृत सीखने की आवश्यकता नहीं।

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म्।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की महिला क्लब के सदस्यों के साथ। आश्रम के बच्चें उन्हे प्रार्थना सुना रहे है।

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

नरेन्द्र गुप्ता लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Late Sh. Manohar Lal

Raj Rani Kapoor

Late Smt. Sudesh Devi

R. D. Rishi

Sauham Chakra

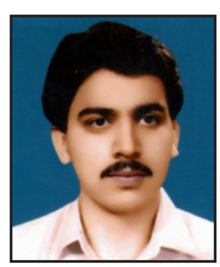

Atul Mahajan

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870

रक्षाबन्धन का महत्त्व और उपयोगिता

डॉ0 जगदीश शास्त्री

रक्षाबन्धन का पर्व कितना पुराना है या एक नवीन प्रचलन यह एक पृथक् विषय हो सकता है। कई व्यक्ति इसे रामायण काल एवं महाभारत काल में भी मनाए जाने का इतिहास रचने लगे हैं। सीता, पार्वती, राधा एवं रुक्मिणी के द्वारा भी रक्षाबन्ध भाई बनाने की कहानियाँ गढ़ने लगे हैं। यद्यपि इन मनःप्रसूत दन्तकथाओं में ऐतिहासिक सच्चाई ढूंढ़ना किसी मतिमान का कार्य नहीं है तथापि वर्तमान भारतीय समाज जो कि अनार्य आसुरी भोगवादी असभ्य आचरण की अनुयायी बनती जा रही है। जिसमें भाई और बहन के सम्बन्धों में दिनानुदिन शिथिलता और गिरावट हो रही है। रक्षाबन्धन त्योहार के कारण इन सम्बन्धों की पवित्रता और घनिष्टता बनाये रखने में बड़ी सहायता मिली है। वस्तुतः आज के हमारे समाज में भोगसामग्री के निर्माण में तो बुद्धि लगाई जाती है पर किस सामग्री का प्रयोग किसे करना चाहिए और किसे नहीं इस विषय में निर्णय करते समय बुद्धि को पूर्णतः पृथक् रखा जाता है तथा मन का अनुकरण किया जाता है। हमें क्या खाना चाहिए, हमें क्या पीना चाहिए और क्या पहनना चाहिए इसका निर्णय वैद्य अथवा बुद्धि नहीं अपितु मन और जिह्वा मिलकर लेते हैं। इसी प्रकार किसे अपना मित्र और किसे जीवन साथी बनाना चाहिए, किसके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए और किसके साथ नहीं करना चाहिए इसके निश्चय में भी वैदिक मर्यादा, परम्परा या वैज्ञानिक सिद्धांत के स्थान पर स्वेच्छा को ही प्रधानता दी जाने लगी है। इस स्वेच्छाचरण और मनमानी के तो क्या कहने! मनमानी तो नाम ही है बिना नियम के, बिना किसी नियन्त्रण के किया गया कार्य। अपनी इच्छा, अपना मन और दिल को तो बस अवारा छोड़ने की देर है फिर देखिये यह किसी पर भी आने लगता है। आजकल तो लोग गीत के स्वर में इसका समर्थन करते रहते हैं–''है अपना दिल तो आवारा, न जाने किस पे आ जाए।।'' न इसे अपने–पराये का ज्ञान रहता है न किसी गोत्र–पिण्ड का ध्यान। न इसे अपनी बेटी–बहु की पहचान रहती है, न बुढ़िया–बच्ची की मान। यदि मन में कोई झिझक आये भी तो ऐसे समय में फिल्म की ये पंक्तियाँ शीघ्र ही दुविधा समाप्त कर मार्ग प्रशस्त कर देती हैं–''न उम्र की सीमा हो, न जाति का हो बन्धन! जो प्यार करे कोई तो देखे केवल मन!! यह तो हुई आज के आम लोगों की बात। पर आज की युवा पीढ़ी जो फिल्मी संवाद और गीतों को अपना मार्गदर्शक मानती है, साथ ही जाने–अनजाने फ्रायड के मनोविज्ञान और रजनीश के दर्शन के अनुसार चलने वाली है इसे अपने ब्रह्मचर्य आश्रम में न विद्याब्रह्म की भूख रही है न परमब्रह्म की, इसे तो बस रुपया और वासना की भूख है वह चाहे जैसे भी मिट जाए, जिससे भी मिट जाए। जो भी सामने हो, जो भी आस पास रहता हो उसी पर झट दिल आ जाता है, आजकल इसे बुरा भी नहीं माना जाता, इसे मना नहीं किया जाता। इनका विचार है जिस पर दिल आ जाए उसी के साथ तुम भी हो लो, मन जिस पर आ गया उसे पा लो, अपना लो। मन को मारो मत उसे उदास न करो, जो दिल चाहे सो करो, जो मन करे सो खाओ चाहे वह अन्न–फल हो या अण्डे–मॉस। जो मन कहे सो पीओ चाहे दूध हो या शराब। जिस पर दिल आ जाए उससे यौन सम्बन्ध बना लो चाहे वह अपने गोत्र और पिण्ड का ही क्यों न हो। मन तो निर्बल बेल के समान है आस पास जो हो उसी से लिपट जाता है। उसी पर चढ़ जाता है। उसे ही अपना लेता है। जो भी सहवासी